Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JULY-AUGUST, 2020, VOL- 8/60

डा0 भीमराव अम्बेडकर का शैक्षिक चिंतन एवं स्त्री शिक्षा

शैलेश यादव
शोध छात्र, शिक्षा शास्त्र विभाग, इलाहाबाद, विश्वविद्यालय
Email. Shaileshyadavecc2015@gmail.com

Abstract

प्रस्तुत भाोध पत्र में डा0 भीमराव अम्बेडकर के शिक्षा दर्शन एवं उनके द्वारा सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक के संदर्भ में अध्ययन किया गया है। लोकतांत्रिक प्रणाली में शिक्षा का स्वरूप और समता मूलक समाज के निर्माण में शिक्षा की भूमिका का सूक्ष्म विवेचन किया गया है। उनके विचार है कि वर्तमान शैक्षिक प्रणाली तभी सार्थक होगी जब मानव के गुण एवं दृष्टिकोण सकारात्मक हो सकेंगे अन्यथा शैक्षिक प्रणाली मानव जीवन को समुचित विकास के तरफ अग्रसर न कर अन्धकार की ओर प्रेरित करेगी। इनका विचार था कि भील और सदाचार पर आधारित शिक्षा जीवन के आधारभूत स्तम्भ है जो देश के विकास एवं परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका का निवर्हन करते है। समाज की संरचना समानता पर आधारित होनी चाहिए जो शिक्षा के द्वारा सम्भव है, और यह उचित शिक्षा प्रबन्धन के द्वारा प्राप्त की जा सकती है। जब समाज सामाजिक दृष्टि से उन्नत होगा तो आर्थिक संवृद्धता और राजनैतिक सशक्ता सुगमता से प्राप्त होगी। महिला शिक्षा के सन्दर्भ में डा0 भीमराव अम्बेडकर का कहना था कि स्त्रियों की शिक्षा पुरूशों के समान प्रदान की जानी चाहिए जिससे समाज में बराबरी की भागीदारी सुनिश्चित की जा सके। इस प्रकार प्रस्तुत भाोध पत्र में डा0 अम्बेडकर जी के शैक्षिक विचारों को सम्मिलित करते हुए वर्तमान शैक्षिक प्रणाली की उपादेयता को व्याख्यायित किया गया है।

प्रमुख शब्दावली *– शिक्षा दर्शन, स्त्री शिक्षा इत्यादि*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना –

किसी भी राष्ट्र का विकास इस विचार पर निर्भर करता है कि महिलाओं की सामाजिक हैसियत क्या है? एव समाज में उनका प्रतिनिधित्व का स्थान क्या है? परम्परागत समाज में लैंगिक विभेदकता, पुरूष प्रधान मानसिकता, शारीरिक विभेदकता के परिणाम स्वरुप स्त्रिया को समाज में दोयम दर्जे का स्थान प्राप्त था। जो भारत के सन्दर्भ में हिन्दू समाज में महिलाओं के 'शैक्षिक, समाजिक, आर्थिक और अन्य क्षेत्रों भी लागू होती है। बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर हिन्दू समाज में व्याप्त शोषण, अशिक्षा, निर्धनता, बरोजगारी असमानता इत्यादि को समाप्त करने के लिए संविधान में उचित स्थान दिलाने के पक्षधर थे। इन्होने मानव जीवन की प्रमुख प्रणाली लोकतान्त्रिक व्यवस्था को पारदर्शी बनाने की वकालत की जिससे समाज के सभी वर्गो में समरसता की स्थिति व्याप्त हो सके।

हिन्दू महिलाओं की स्थिति को उठाने के लिए समानता आधारित विचार के पक्षधर थे जिसमें नैतिकता, सदाचार, ईमानदारी, कर्मठता के तत्व समाहित थे। इनका विचार था कि केवल दलितो को
शिक्षा के अवसर नही उपलब्ध करना चाहिए अपितु समाज के सभी वर्गो को शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराने चाहिए।

सामाजिक समानता प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम हिन्द, सिख, इसाई, बौद्ध, जैन के सभी समाज में स्त्री शिक्षा के लिए विशेष प्रावधान करने चाहिए जिससे मानव कल्याणकारी विचार की स्थापना को

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

गति प्रदान की जा सके। डा0 भीमराव अम्बेडकर ने हिन्दू समाज में व्याप्त बुराईयों पर कड़ा प्रहार किया जिसके फलस्वरुप लोगों में वैज्ञानिक एवं तार्किक विचारों को समावेश हुआ।

प्रसिद्ध ग्रन्थ 'जातिप्रथा उन्मूलन' में उल्लेख है कि जुलाई 1942 में नागपुर 'दलित वर्ग परिषद' सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए उन्होने कहा कि दलिता का विकास एवं प्रगति का विचार रखने वाले मनुष्यों तथा महिलाओं की अधिक संख्या इकट्ठा होता देखकर निश्चित तौर पर खुशी हो रही होगी लेकिन यह खुशी तभी सार्थक होगी जब दलितो के साथ महिलाओं के उत्थान के बारे में उचित प्रावधान किये जाये। समाज में शिक्षा से वंचित लोगों के बारे में उन्होनें कहा कि अपने अन्दर तार्किक दृ ष्टिकोण का विकास करे जिससे बाह्य आडम्बर ीध्र समाप्त किया जा सके। अनपढ़ महिलाओं के लिए उन्हाने कहा कि सफाई से रहना सीखे, परम्परागत बुराइया से बचे, आत्मसम्मान की भावना का विकास करे, दाम्पत्य जीवन को भीध्र स्थापित न करे, सन्तानोत्पत्ति पर नियन्त्रण रखे। समाज में प्रचलित पति गुलामी की स्थिति का विरोध करे, समानता आधारित समाज की स्थापना को बल दें इत्यादि।

डा0 अम्बेडकर का शिक्षा दर्शन –

डा0 अम्बेडकर ने शिक्षा को जीवन का प्रमुख आधार स्तम्भ माना है इसके अभाव में मानव सर्वार्गीण विकास करना असम्भव है। शिक्षा ही एकता, बन्धुता और देश प्रेम के विचारा को जन्म देती है जिससे सभ्यता और संस्कृति का आधार सतम्भ खड़ा होता है। यह मनुष्य को मनुष्तत्व की ओर ले जाती जिसके फलस्वरुप प्रेम, सहानुभूति, करुणा, इमानदारी, कर्मठता इत्यादि का विकास होता है। इसी के माध्यम से हिंसक प्रवृत्तियों को त्यागकर अहिंसक विचारा का समावेश किया जा सकता है। यह मनुष्य को अनुशासित जीवन व्यतित करना सीखाती है। डा0 भीमराव अम्बेडकर अमरिका में जब शिक्षा अर्जित करने के लिए गये तो वे दो देशो की शैक्षिक प्रणाली में असमानता देख हतप्रभ हो गये। जहाँ अमेरिकन शैक्षिक प्रणाली स्वच्छ, स्वछंद, सम्वृद्ध और उदारतापूर्ण वातावरण से पोषित थी वही भारतीय शैक्षिक प्रणाली वर्ग आधारित एवं असमानता आधारित देख पीड़ित हो उठे। समस्त घटनाओं ने इनके हृदय को झकझोर कर रख दिया जिससे इन्होने अपने मन में सकल्प लिया कि दलित शिक्षा, महिला शिक्षा को सामाजिक विकास के आधार स्तम्भ के रुप में स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील रहुँगा। डा0 अम्बेडकर ने 12 मार्च 1927 के मुम्बई विधान मण्डल में भारत की शिक्षा के सन्दर्भ में कहा कि अपने बच्चों की शिक्षा के मामले में हमारी प्रगति बहुत बहुत मन्द है। भारत सरकार ने जो अभी हाल में जो रिपोर्ट प्रकाशित की है वह सोचनीय है जिसे पढ़कर दुखः होता है। 27 फरवरी 1927 को लेजिस्लेटिव कौसिल में बजट पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि शिक्षा ऐसी वस्तु है जो प्रत्येक व्यक्ति तक पहुचनी चाहिए जो सस्ती हो ताकि निर्धन से निर्धन व्यक्ति भी ग्रहण कर सके। इनका विचार था कि शिक्षा एक ऐसा कारक है जिस पर समुचित ध्यान दिए बिना न्याय के साथ विकास की अवधारणा सार्थक नही हो सकती। ये अनिवार्य शिक्षा के पक्षधर थे। ये शिक्षा का राष्ट्रीयकरण करना चाहते थे। इनका मानना था कि शिक्षा वही है जो योग्यता को स्थापित करे, असामनता को समाप्त करे, नैतिकता का बोध कराये, पेट को रोटी और शान को तृप्ति प्रदान करे वही सच्चे अर्थो में शिक्षा है। वर्तमान समय में छात्र शिक्षा अर्जित करने के पश्चात अपने तक ही सीमित हो जाते है जो बाबा साहेब के विचारो से विचरित है। समाज के वे लोग जो शिक्षा अर्जित कर सम्पन्नता अर्जित किये हुए हैं समाज के उत्थान के लिए अपनी कमाई का बीसवाँ हिस्सा (5%) शैक्षिक उद्देश्यो को प्राप्त करने के लिए प्रदान करे जिससे समाज का उत्थान हो सके।

डा0 अम्बेडकर का महिलाओं के सम्बन्ध में विचार

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

भारत विविधता का देश माना जाता है यहाँ सभी धर्म के स्त्री एवं पुरुष रहते है। समाज में महिला एंव पुरुष में असमानता की स्थिति व्याप्त है। एक तरफ हमारी संस्कृति स्त्रियों को देवी के रुप में पूजता है दूसरी तरफ जन्मदायिनी के रुप में हृदय में उच्च स्थान प्रदान करता है। लेकिन समानता के स्थान पर असमानता को जन्म देता है। डा0 भीमराव अम्बेडकर इसी विरोधाभास को लेकर महिलाओं उन्नति, मुक्ति के सन्दर्भ में अपने विचारो का समावेशन कर भारत में नारिया का उच्च आदर्श एवं इनके त्याग की भावना को स्थापित करते है। इन्ही विचारा के फलस्वरुप संसद में मन्दिर प्रवेश विधेयक और हिन्दु कोड बिल प्रस्तुत किया। जुलाई 1928 में मुम्बई विधान परिषद में महिलाओं के लिए प्रसूति के सन्दर्भ में विधेयक प्रस्तुत करते हुए कहा था कि यह देश के हित में है कि माँ को प्रसव के समय आराम मिले। इसमें महिला श्रमिका के लिए वेतन एवं अवकाश का भी प्रावधान था। इन्होंने नवम्बर 1938 में मुम्बई विधान परिषद में जनसंख्या नियन्त्रण निधेयक को पारित कराने में सफलता प्राप्त की। इस विधेयक ने दीघ काल से परम्परागत रुप से चले जीवन दर्शन को ध्वस्त कर दिया जिसमें महिलाओं को गुलाम के रुप देखा जाता था जिसका अपनी देह और कोख पर अधिकार न हो। यह एक ऐसा विधेयक था, जो भारत में सर्वप्रथम महिलाओं को यह अधिकार प्रदान किया कि अनचाहे गर्भ से मुक्ति उनका अपना निर्णय होगा और कोख पर उनका अधिकार होगा। डा0 अम्बेडकर का दृष्टिकोण व्यापक है वे भारतीय समाज में नारियो के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सास्कृतिक अधिकार के उत्थान की बात करते है जिससे नारियो में आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता एवं स्वरोजगार की भावना का समावेशन किया जा सके। इन सबके परिणाम स्वरुप महिलाए किसी भी सामाजिक कार्य में लोगों से पीछे नही रहेगी। इनका विचार था कि नारिया संगठित हो जाए तो विश्वास के साथ किसी भी कार्य को आसानी से सम्पादित कर सकती है और समाज के उत्थान में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। समाज की बुराईयो को समाप्त करने में महिलाओं का महान योगदान हो जायेगा। वे समाज के संगठन, सम्प्रदाय के विकास का आधार औरता की उन्नति और उनकी विकास के रुप में मापते थे। वे नारियो को गुलामी के जंजीरो से मुक्त दिलाने के पक्षधर थे। इसलिए उन्होनें कहा कि स्वच्छ रहना सीखे, बुराइयो को त्याग दे, अपने बच्चा की शिक्षा के लिए उचित कदम उठाये, उनमें महात्त्वाकांक्षा की भावना का विकास करे, वैवाहिक जीवन सोघ्र स्थापित न करे। स्त्रीयो को साहसी और निर्भिक बनाने के पक्षधर थ, जिससे उनके अन्दर साहस बुद्धिमत्ता का तत्व विकसित हो सके। स्वतंन्त्रता के पश्चात भारतीय सविधान में डा0 भीम राव अम्बेडकर के विचारा को समावेश करते हुए नारिया की सामाजिक स्थिति को उन्नतशील और प्रगतिशील बनाने के लिए नीतिनिदेशक सिद्धान्त और मल अधिकारा के प्रावधान के रुप स्थापित किया गया है।

अम्बेडकर के स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में विचार – सम्पूर्ण विश्व में मानवीय जीवन को विकासोन्मुख बनाने के लिए स्वतंन्त्रता, समानता, विश्व बन्धुत्व की भावना विकास किया जाना आवश्यक है। भारत के सम्बन्ध में इन तत्वा की सार्थकता सभी पूर्ण होगी जब प्रत्येक नारी की शिक्षा सर्वसुलभ होगी है अन्यथा मानव जीवन कल्पना करना निर्थक होगा। किसी भी राष्ट्र की सम्पन्नता महिला शिक्षा में निहित होती है इसलिए डा0 भीम राव अम्बेडकर ने स्त्री शिक्षा पर बल दिया। उन्हाने कहा कि स्त्रियो की शिक्षा पुरूषो के समान प्रदान किया जाना चाहिए। स्वतंन्त्रता एवं समानता के अधिकार बराबर दिये जाने चाहिए तभी देश की प्रगति में समान अवसर उपलब्ध हो सकगे और महिलाए पुरुषों के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर समान रुप से चल सकेगी। वर्तमान समाज की लड़किया कल के समाज में अलग–अलग रुपों में भूमिका निभा सके जैसे, सास, बहु, बहन, पत्नी, दादी, नानी इत्यादि।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

बाबा साहेब महिला शिक्षा के सन्दर्भ में अपने विचार स्पष्ट रुप से रखते है इसका प्रमाण एक उदाहरण से एक घटना में मिलता है एक बार डा0 अम्बेडकर अपने पिता के एक मित्र श्री जमेदार को अमेरिका से एक पत्र लिखे, जिसमें लड़को के साथ लड़कियों की शिक्षा प्रदान की जाने चाहिए जिससे देश की प्रगति हो सके। आप जो अपनी लड़कियों को पढ़ा रहे है उसका प्रतिफल अवश्य प्राप्त होगा। आप जिन लोगों से परिचित है स्त्री शिक्षा के महत्तव को जरुर बताये। उनका मानना था कि एक पुरुष को शिक्षित होने का मतलब अकेले शिक्षित होना है जबकि एक महिला के शिक्षित होने का अर्थ एक परिवार का शिक्षित होना है। इस प्रकार हम पाते है कि डा0 भीमराव अम्बेडकर के सभी कृत्यों में स्त्री–पुरुष समानता दिखाई देती है।

निष्कर्ष :– सभी तथ्या के माध्यम से हम इस निष्कर्ष पर पहुचते ह कि डा0 भीम राव अम्बेडकर के विचारा से शिक्षा जगत एवं सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए जिसमें महिला शिक्षा के विचार अनमोल है। उनका मानना था कि समाज में सभी वर्ग के लोगो को समान शिक्षा के अवसर उपलब्ध होना चाहिए चाहे वह पुरूष हो, स्त्री हो गरीब हो या अमीर हो। महिला शिक्षा पर विरोध ध्यान देने की आवश्यकता है क्योकि कोई समाज तभी पूर्णता को प्राप्त करेगा जब महिलाए शिक्षित एवं सशक्त होगी तथा साथ ही देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचो :–

*अनिल, नलिनी एवं शहारे, एम0 एल0 (*1993*) डा0 बाबा साहेब अम्बेडकर की सर्घष यात्रा एव संदेश, नई दिल्ली : संगमेस बुक्स*

*कुमार, विरेन्द्र एवं सिंह, शिरीष पाल (*2017*) महिलाओ के सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका परिपेक्ष्य वर्ष* 24 *अ–*3

*कुमार विरेन्द्र एवं यादव, देवेन्द्र कुमार (*2019*). डा0 भीमराव अम्बेडकर का शैक्षिक दर्शन तथा महिला सशक्तिकरण. अजन्ता जर्नल वायलुम III अप्रैल–जून ISSM* 2277–5730

खेरमोडे, सी. वी. बाबा साहेब डा0 अम्बेडकर नीवम एवं चिंतन, नई दिल्ली : सम्यक प्रकाशन

चंदेल, धर्मवीर 2016 *अम्बेडकर के चिंतन में मानवधिकार जयपुर पोइटर पब्लिकार्स*

*भारती कवल (*2009*) समाजवादी अम्बेडकर, नई दिल्ली : स्वराज प्रकाशन*

*राव रामवचन (*1993*) भारत रत्न डाव अम्बेडकर व्यक्तित्व एवं कृतित्व, सागर प्रकाशन*

*रत्तु, एनव सीव (*2008*) डा0 अम्बेडकर के कुछ अनछुए प्रसंग, नई दिल्ली : सम्यक प्रकाश*

*सिलसायन, सुधीर (*2016*) सामाजिक न्याय सदेय वर्ष* 14 *अंक ISSN* 2455–618 */*

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies